By: OM KUMAR SINGH
ASSISTANT PROFESSOR
DEPT. OF POL. SC.
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR
LNMU, DARBHANGA

B.A.(H)
PART-1ST
POLITICAL SCIENCE
PAPER-1ST, CH-6th
LECTURE NO.- 14
DATE: 25/04/2020

शक्ति के सिद्धांत

शक्ति संरचना के सिद्धांत परम्परागत रूप से शक्ति को ऐसी क्षमता के रूप में देखा जाता है जिसके आधार पर एक पक्ष दूसरे पक्ष पर नियंत्रण स्थापित करता है। समाज में ऐसे अनेक समूह अथवा वर्ग होते हैं जो अपनी शक्ति द्वारा दूसरे पर नियंत्रण रखते हैं। इस आलोक में निम्नलिखित चार सिद्धांत महत्वपूर्ण है —

(1) वर्ग-प्रभुत्व का सिद्धांत
(2) विशिष्ट वर्गीय सिद्धांत
(3) नारीवादी सिद्धांत
(4) बहुलवादी सिद्धांत

(1) वर्ग-प्रभुत्व का सिद्धांत :

यह सिद्धांत मूलतः मार्क्सवाद की देन है, इसलिए इसे मार्क्सवादी सिद्धांत भी कहा जाता है। इसके अनुसार आर्थिक आधार पर समाज हमेशा से ही दो वर्गों में बँटा रहा है-

(i) बुर्जुआ वर्ग, जो साधनों का स्वामी होता है और आर्थिक रूप से मजबूत होता है। यह समाज पर अपना नियंत्रण स्थापित करता है। इसके पास शक्ति होती है।

(ii) सर्वहारा वर्ग, जो अपनी श्रम-शक्ति द्वारा जीवन निर्वाह करता है और आर्थिक रूप से कमजोर होता है। यह बुर्जुआ वर्ग के द्वारा शोषित होता है। इसके पास शक्ति नहीं होती है।

वर्णित दोनों वर्गों में हमेशा संघर्ष होते रहता है। इस

Next

Scanned with CamScanner

Date: _____ Page: _____

क्रमशः सिद्धांत के अनुसार " अब तक का इतिहास वर्ग - संघर्ष का इतिहास रहा है।"

(2) विशिष्ट वर्गीय सिद्धांत :
(Elite Theory)

यह सिद्धांत शक्ति के आधार पर समाज को दो वर्गों में विभाजित करता है—

(i) विशिष्ट वर्ग, जो शक्तिशाली होता है।
(ii) सामान्य वर्ग, जिसके ऊपर शक्ति का प्रयोग होता है।

समाज का उपर्युक्त विभाजन केवल आर्थिक आधार पर नहीं, वरन् कुशलता, संगठन क्षमता, बुद्धिमत्ता, प्रबंधन क्षमता, नेतृत्व क्षमता आदि के आधार पर भी होता है। इन विशेषताओं के आधार पर प्रत्येक प्रकार की शासन व्यवस्था में एक छोटा वर्ग होता है जो शक्तिशाली होता है और सामान्य जनों पर अपनी शक्ति का प्रयोग करता है। जैसे - देश के राजनेता, प्रशासक, उद्योगपति, आदि सदैव शक्तिशाली बने रहते हैं, चाहे औपचारिक रूप से किसी भी राजनीतिक तंत्र की देश में सरकार क्यों न हो।

(3) नारीवादी सिद्धांत :

शक्ति के सन्दर्भ में यह प्रमुख सिद्धांत है। इसकी मान्यता है कि समाज में शक्ति के विभाजन का आधार लैंगिक है। समाज में सम्पूर्ण शक्ति पुरुषों के पास केन्द्रित होती है। इस शक्ति का प्रयोग पुरुषों के द्वारा महिलाओं के ऊपर किया जाता है। अतः इसी आधार में विश्व के भिन्न-भिन्न हिस्सों में नारी मुक्ति आन्दोलन हुए हैं और लम्बे संघर्ष के बाद महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त हुआ है। भारतीय परम्परा

Scanned with CamScanner

क्रमशः में महिलाओं को प्रारंभ से उच्च स्थान प्राप्त रहा है। भारत में महिलाओं को आजादी के साथ ही पुरुषों के बराबरी का अधिकार दे दिए गए।

(4) शक्ति का बहुलवादी सिद्धांत:

यह सिद्धांत वर्णित तीनों शक्ति सिद्धांतों से अलग है। बहुलवादी सिद्धांत के अनुसार समाज में शक्ति किसी वर्ग विशेष में न होकर अनेक समूहों अथवा वर्गों में विभाजित होती है उदार लोकतांत्रिक व्यवस्था में शांति के लिए सौदेबाजी चलती रहती है जिसके कारण शक्ति के आधार पर शोषण व्यवस्था नहीं होती है।

शक्ति की भारतीय अवधारणा उत्तरदायित्व की भावना पर आधारित है। जिसका उपयोग सार्वजनिक हित के लिए किए जाने का प्रावधान है। इसके साथ ही यह प्रयास भी किया जाता है कि शक्तिहीन व्यक्ति शक्ति सम्पन्न हो कर समाज की मुख्य-धारा से जुड़ जाय। इसके लिए भारतीय संविधान में भी कई तरह के प्रावधान किए गए हैं।

x———x———x———x

संभावित प्रश्न:

शक्ति के विभिन्न सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।

Scanned with CamScanner